

INDIAN

POLITY

BY – SUJEET BAJPAI SIR



Composition of Lok Sabha

The maximum strength of the Lok Sabha is fixed at 552.

Out of this, 530 members are to be the representatives of the states, 20 members are to be the representatives of the union territories and 2 members are to be nominated by the president from the Anglo-Indian community.

Abolished in 299





लोकसभा की संरचना लोकसभा की अधिकतम संख्या 552 तय है। इसमें से 530 सदस्य राज्यों के प्रतिनिधि होने हैं, 20 सदस्यों को केंद्र शासित प्रदेशों का प्रतिनिधि होना है और 2 सदस्यों को एंग्लो इंडियन समुदाय से राष्ट्रपति मनोनीत किया जाना है।



At present, the Lok Sabha has 545 members. Of these, 530 members represent the states, 13 members represent the union territories and 2 Anglo-Indian members are nominated by the President.

वर्तमान में लोकसभा में 545 सदस्य हैं। इनमें से 530 सदस्य राज्यों का प्रतिनिधित्व करते हैं, 13 सदस्य केंद्र शासित प्रदेशों का प्रतिनिधित्व करते हैं और 2 एंग्लो-इंडियन सदस्य राष्ट्रपति द्वारा मनोनीत किए जाते हैं।



Duration of Two Houses

Duration of (Rajya Sabha:

The Rajya Sabha (first constituted in 1952) is a continuing chamber, that is, it is a permanent body and not subject to dissolution.

राज्यसभा की अवधि:

राज्यसभा (पहली बार 1952 में गठित) एक सतत कक्ष है, अर्थात यह एक स्थायी निकाय है।



However, one-third of its members retire every second year.

Their seats are filled up by fresh elections and presidential nominations at the beginning of every third year.

हालांकि इसके एक तिहाई सदस्य हर दूसरे साल रिटायर होते हैं। उनकी सीटें हर तीसरे साल की शुरुआत में नए चुनाव और राष्ट्रपति पद के नामांकन से भरी जाती हैं।



The retiring members are eligible for re-election and renomination any number of times.

The Constitution has not fixed the term of office of members of the Rajya Sabha and left it to the Parliament.

सेवानिवृत्त होने वाले सदस्य ों को फिर से चुनाव और पुनर्नवितेशन के लिए पात्र हैं। संविधान ने राज्यसभा के सदस्यों के पद का कार्यकाल तय नहीं किया है और इसे संसद पर छोड़ दिया है।



Accordingly, the Parliament in the Representation of the People Act (1951) provided that the term of office of a member of the Rajya Sabha shall be six years.

The act also empowered the president of India to curtail the term of members chosen in the first Rajya Sabha.



तदनुसार, जनप्रतिनिधित्व कानून (1951) में संसद ने यह प्रावधान किया कि राज्यसभा के सदस्य के पद की अवधि छह वर्ष होगी।

इस अधिनियम ने भारत के राष्ट्रपति को पहली राज्यसभा में चुने गए सदस्यों के कार्यकाल में कटौती करने का अधिकार भी दिया ।



In the first batch, it was decided by lottery as to who should retire.

Further, the act also authorised the President to make provisions to govern the order of retirement of the members of the Rajya Sabha.

पहले बैच में लॉटरी से तय हुआ कि किसे रिटायर होना चाहिए। इसके अलावा इस अधिनियम में राष्ट्रपति को राज्यसभा के सदस्यों की सेवानिवृत्ति के आदेश को नियंत्रित करने के प्रावधान करने के लिए भी अधिकृत किया गया।



Duration of Lok Sabha

Unlike the Rajya Sabha, the Lok Sabha is not a continuing chamber.

Its normal term is five years from the date of its first meeting after the general elections, after which it automatically dissolves.

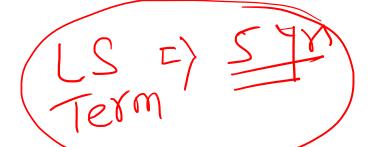
लोकसभा की अवधि राज्यसभा के विपरीत लोकसभा का कोई सदन जारी नहीं है।

इसका सामान्य कार्यकाल आम चुनाव के बाद अपनी पहली बैठक की तारीख से पांच साल का होता है, जिसके बाद यह अपने आप धुंल के जाता है।



However, the President is authorised to dissolve the Lok Sabha at any time even before the completion of five years and this cannot be challenged in a court of law.

हालांकि राष्ट्रपति पांच साल पूरे होने से पहले ही किसी भी समय लोकसभा भंग करने के लिए अधिकृत हैं और इसे अदालत में चुनौती नहीं दी जा सकती।





Further, the term of the Lok Sabha can be extended during the period of national emergency be a law of Parliament for one year at a time for any length of time.

However, this extension cannot continue beyond a period of six months after the emergency has ceased to operate.



इसके अलावा, राष्ट्रीय आपातकाल की अवधि के दौरान लोकसभा का कार्यकाल बढ़ाया जा सकता है संसद का कानून किसी भी समय एक समय में एक वर्ष के लिए होता है।

हालांकि, आपातकाल के संचालन के बाद यह विस्तार छह महीने की अवधि से आगे जारी नहीं रह सकता ।





The term of the fifth Lok Sabha that was to expire on 18 March, 1976, was extended by one year upto 18 March, 1977 by the House of the People (Extension of Duration) Act, 1976.

It was extended for a further period of one year up to 18 March, 1978 by the House of the People (Extension of Duration) Amendment Act, 1976.

However, the House was dissolved on 18 January 1977, after having been in existence for a period of Five Years, 10 Months And Six Days.



नोट:

पांचवीं लोकसभा का कार्यकाल जो 18 मार्च, 1976 को समाप्त हो रहा था, उसे हाउस ऑफ पीपल (अवधि का विस्तार) अधिनियम, 1976 द्वारा एक वर्ष के लिए बढ़ाकर 18 मार्च, 1977 कर दिया गया था।

इसे हाउस ऑफ पीपल (अवधि का विस्तार) संशोधन अधिनियम, 1976 द्वारा 18 मार्च, 1978 तक एक वर्ष की और अवधि के लिए बढ़ा दिया गया था।

तथापि, पांच वर्ष, 10 महीने और छह दिन की अवधि तक अस्तित्व में रहने के बाद 18 जनवरी १९७७ को सभा को भंग कर दिया गया।



The Constitution lays down the following qualifications for a person to be chosen a member of the Parliament:

- He must be a citizen of India.
- He must make and subscribe to an oath or affirmation before the person authorised by the election commission for this purpose. In his oath or affirmation, he swears
 - (a) To bear true faith and allegiance to the Constitution of India
 - (b) To uphold the sovereignty and integrity of India
- He must be not less than 30 years of age in the case of the Rajya Sabha and not less than 25 years of age in the case of the Lok Sabha.
- He must posses other qualifications prescribed by Parliament.
 The Parliament has laid down the following additional qualifications in the





Each House of Parliament has its own presiding officer.

There is a Speaker and a Deputy Speaker for the Lok Sabha and a Chairman and a Deputy Chairman for the Rajya Sabha.



संसद के पीठासीन अधिकारी

संसद के प्रत्येक सदन का अपना पीठासीन अधिकारी होता है।

लोकसभा के लिए एक अध्यक्ष और एक उपाध्यक्ष और राज्यसभा के लिए एक अध्यक्ष और एक उपसभापति है।



A panel of chairpersons for the Lok Sabha and a panel of vice-chairpersons for the Rajya Sabha is also appointed.

लोकसभा के लिए अध्यक्षों का एक पैनल और राज्यसभा के लिए उपाध्यक्षों का पैनल भी नियुक्त किया जाता है।



Speaker of Lok Sabha



The institutions of Speaker and Deputy Speaker originated in India in 1921 under the provisions of the Government of India Act of 1919 (Montague-Chelmsford Reforms).

At that time, the Speaker and the Deputy Speaker were called the President and Deputy President respectively and the same nomenclature continued till 1947.



स्पीकर और डिप्टी स्पीकर की संस्थाओं की उत्पत्ति भारत सरकार अधिनियम 1919 (मोंटाग-चेम्सफोर्ड रिफॉर्म्स) के प्रावधानों के तहत 1921 में भारत में हुई थी।

उस समय अध्यक्ष और उपाध्यक्ष को क्रमश राष्ट्रपति और उप राष्ट्रपति कहा जाता था और यही नामकरण 1947 तक जारी रहा।



Before 1921, the Governor-General of India used to preside over the meetings of the Central Legislative Council.

In 1921, the Frederick Whyte and Sachidanand Sinha were appointed by the Governor-General of India as the first Speaker and the first Deputy Speaker (respectively) of the central legislative assembly.

In 1925, Vithalbhai J. Patel became the first Indian and the first elected Speaker of the central legislative assembly.



1921 से पहले भारत के गवर्नर जनरल केंद्रीय विधान परिषद की बैठकों की अध्यक्षता करते थे।

1921 में, फ्रेडिंरिक व्हाट और सच्चिदानंद सिन्हा को भारत के गवर्नर-जनरल द्वारा पहले अध्यक्ष और केंद्रीय विधान सभा के पहले डिप्टी स्पीकर (क्रमशः) के रूप में नियुक्त किया गया था।

1925 में विट्ठलभाई जे पटेल पहले भारतीय और केंद्रीय विधान सभा के पहले निर्वाचित अध्यक्ष बने।



The Government of India Act of 1935 changed the nomenclatures of President and Deputy President of the Central Legislative Assembly to the Speaker and Deputy Speaker respectively.

However, the old nomenclature continued till 1947 as the federal part of the 1935 Act was not implemented.



1935 के भारत सरकार अधिनियम ने केंद्रीय विधान सभा के अध्यक्ष और उप राष्ट्रपति के नामकरणों को क्रमश अध्यक्ष और उपाध्यक्ष में बदल दिया।

हालांकि, पुराना नामकरण 1947 तक जारी रहा क्योंकि 1935 अधिनियम का संघीय हिस्सा लागू नहीं किया गया था।



G V Mavalankar and Ananthasayanam Ayyangar had the distinction of being the first Speaker and the first Deputy Speaker (respectively) of the Lok Sabha.

G V Mavalankar also held the post of Speaker in the Constituent Assembly (Legislative) as well as the provisional Parliament.

He held the post of Speaker of Lok Sabha continuously for one decade from 1946 to 1956.



जी वी मावलंकर और अनंतस्यम अयंगर को लोकसभा का पहला अध्यक्ष और प्रथम डिप्टी स्पीकर (क्रमश) होने का गौरव प्राप्त हुआ।

जी वी मावलंकर ने संविधान सभा (विधान) के साथ-साथ अनंतिम संसद में अध्यक्ष का पद भी संभाला ।

उन्होंने 1946 से 1956 तक लगातार एक दशक तक लोकसभा अध्यक्ष का पद अपने पास रखा।



Election and Tenure

The Speaker is elected by the Lok Sabha from amongst its members (as soon as may be, after its first sitting).

The date of election of the Speaker is fixed by the President.

Usually, the Speaker remains in office during the life of the Lok Sabha.



चुनाव और कार्यकाल लोकसभा द्वारा अपने सदस्यों के बीच से (जैसे ही हो सकता है, अपनी पहली बैठक के बाद) से अध्यक्ष का चुनाव किया जाता है।

अध्यक्ष के चुनाव की तिथि राष्ट्रपति द्वारा निर्धारित की जाती है।

आमतौर पर लोकसभा के जीवन काल में अध्यक्ष पद पर बने रहते हैं।



However, he has to vacate his office earlier in any of the following three cases:

- 1. if he ceases to be a member of the Lok Sabha;
- 2. if he resigns by writing to the Deputy Speaker; and
- 3. if he is removed by a resolution passed by a majority of all the members of the Lok Sabha. Such a resolution can be moved only after giving 14 days' advance notice.



हालांकि, उन्हें निम्नलिखित तीन मामलों में से किसी में भी पहले अपना कार्यालय खाली करना पड़ता है:

- 1. अगर वह लोकसभा का सदस्य नहीं रह जाता है;
- 2. यदि वह डिप्टी स्पीकर को पत्र लिखकर इस्तीफा देते हैं; और
- 3. अगर उसे लोकसभा के सभी सदस्यों के बहुमत से पारित प्रस्ताव से हटा दिया जाता है। इस तरह का संकल्प 14 दिन का अग्रिम नोटिस देने के बाद ही पेश किया जा सकता है।



- When a resolution for the removal of the Speaker is under consideration of the House, he cannot preside at the sitting of the House, though he may be present.
- However, he can speak and take part in the proceedings of the House at such a time and vote in the first instance, though not in the case of an equality of votes.



जब अध्यक्ष को हटाने का संकल्प सभा में विचाराधीन है, तो वह सभा की बैठक में उपस्थित नहीं हो सकते हैं, यद्यपि वह उपस्थित हो सकते हैं।

हालांकि, वह ऐसे समय में सदन की कार्यवाही में बोल सकते हैं और भाग ले सकते हैं और पहली बार में मतदान कर सकते हैं, हालांकि वोटों की समानता के मामले में नहीं ।



It should be noted here that, whenever the Lok Sabha is dissolved, the Speaker does not vacate his office and continues till the newly-elected Lok Sabha meets.

यहां यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि जब भी लोकसभा भंग होती है तो अध्यक्ष अपना पद खाली नहीं करते और नवनिर्वाचित लोकसभा की बैठक होने तक जारी रहते हैं।



Role, Powers and Functions of Speaker:

- The Speaker is the head of the Lok Sabha, and its representative.
- He is the guardian of powers and privileges of the members, the House as a whole and its committees.
- अध्यक्ष लोकसभा के प्रमुख और उसके प्रतिनिधि होते हैं।
- वह सदस्यों, सभा और इसकी समितियों की शक्तियों और विशेषाधिकारों के संरक्षक हैं।



- He is the principal spokesman of the House, and his decision in all Parliamentary matters is final.
- He is thus much more than merely the presiding officer of the Lok Sabha.
- वह सदन के प्रमुख प्रवक्ता हैं और सभी संसदीय मामलों में उनका निर्णय अंतिम हैं ।
- इस प्रकार वह केवल लोकसभा के पीठासीन अधिकारी से कहीं अधिक हैं।



- He adjourns the House or suspends the meeting in absence of a quorum.
- The quorum to constitute a meeting of the House is one-tenth of the total strength of the House.
- वह सदन स्थगित कर देते हैं या कोरम के अभाव में बैठक स्थगित कर देते हैं।
- सदन की बैठक गठित करने का कोरम सदन की कुल संख्या का दसवां हिस्सा है।



- He does not vote in the first instance. But he can exercise a casting vote in the case of a tie.
- In other words, only when the House is divided equally on any question, the Speaker is entitled to vote.
- Such vote is called casting vote, and its purpose is to LS =) Voling => LiTiebreaker Vole resolve a deadlock.



वह पहली बार में वोट नहीं देते । लेकिन वह टाई के मामले में कास्टिंग वोट का प्रयोग कर सकते हैं ।

दूसरे शब्दों में, जब सभा किसी भी प्रश्न पर समान रूप से विभाजित होती है, तभी अध्यक्ष को मतदान करने का अधिकार होता है।

इस तरह के वोट को कास्टिंग वोट कहा जाता है, और इसका उद्देश्य एक गतिरोध को सुलझाना है।

SAFALTA CLASS

An Initiative by 31473531011

He presides over a joint setting of the two Houses of Parliament.

 Such a sitting is summoned by the President to settle a deadlock between the two Houses on a bill.

• वह संसद के दोनों सदनों की संयुक्त सेहिंग की अध्यक्षता करते हैं।

• इस तरह की बैठक में राष्ट्रपति द्वारा विधेयक पर दोनों सदनों के बीच गतिरोध को निपटाने के लिए बुलाया जाता है।



Joint Sitting of Two Houses

- 1. if the bill is rejected by the other House;
- 2. if the Houses have finally disagreed as to the amendments to be made in the bill; or
- 3. if more than six months have elapsed from the date of the receipt of the bill by the other House without the bill being passed by it.



दो सदनों की संयुक्त बैठक

- 1. यदि विधेयक को दूसरे सदन द्वारा अस्वीकार कर दिया जाता है;
- 2. यदि सदनों ने अंततः विधेयक में किए जाने वाले संशोधनों के बारे में असहमति व्यक्त की है; या
- 3. यदि दूसरे सदन द्वारा बिल प्राप्त करने की तारीख से छह महीने से अधिक का समय बीत चुका है तो बिल पारित किए बिना।



Since 1950, the provision regarding the joint sitting of the two Houses has been invoked only thrice. The bills that have been passed at joint sittings are:

- 1.Dowry Prohibition Bill, 1960.
- 2. Banking Service Commission (Repeal) Bill, 1977
- 3. Prevention of Terrorism Bill, 2002.



1950 के बाद से दोनों सदनों की संयुक्त बैठक के संबंध में प्रावधान केवल तीन बार लागू किया गया है। संयुक्त बैठकों में पारित किए गए विधेयक हैं:

- 1.दहेज निषेध विधेयक, 1960।
- 2. बैंकिंग सेवा आयोग (निरसन) विधेयक, 1977।
- 3. आतंकवाद निरोधक विधेयक, 2002।



• He decides whether a bill is a money bill or not and his decision on this question is final.

• When a money bill is transmitted to the Rajya Sabha for recommendation and presented to the President for assent, the Speaker endorses on the bill his certificate that it is a money bill.



वह तय करते हैं कि कोई बिल मनी बिल है या नहीं और इस सवाल पर उनका फैसला अंतिम है।

जब एक धन विधेयक को सिफारिश के लिए राज्यसभा में प्रेषित किया जाता है और राष्ट्रपति के समक्ष सहमति के लिए प्रस्तुत किया जाता है, तो अध्यक्ष विधेयक का समर्थन करते हैं कि यह एक धन विधेयक है।





Money Bill

- Deals solely with matters listed in Article 110 (1)(a) to (g) of constitution.
 - Imposition/ Abolition/ Remission/ Alteration or Regulation of Central/ States taxes(not local taxes.
 - * Borrowing by central Government.
 - Withdrawal/ receipt of money from consolidated/ Continency fund/ Public Account.
- 2. Can be introduced only in Lok Sabha.
- President/ Government's prior recommendation is required introducing in Lok Sabha/ LA.
- 4. It can be only Government bill.
- Rajya Sabha has limited power only for 14 days.
- President can withhold assent but cannot return it.
- No provision of joint sitting in case of money bills.
- 8. A money bill cannot be returned to the House by the President.

Financial Bill

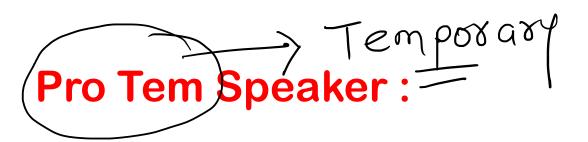
Art(117

Financial Bill Category-A

- 1. Listed under Article 117(1) of the constitution.
- A bill that contains some provisions related to Taxation of expenditure and additionally contains provisions related to any other matter is called Financial Bill.
- 3. Only it is introduced after recommendation of President in Lok Sabha.
- Once passed in the Lok Sabha, becomes like an ordinary bill.
- Rajya Sabha has all power to reject/ amend.
- There can be joint sitting of Lok Sabha & Rajya Sabha.

Financial Bill Category-B

- Categorised as Financial Bill under Article 117(1).
- 2. It is ordinary bill in all respects.
- Both Lok Sabha& Rajya Sabha has equal powers.
- 4. Recommendation of President is needed.
- 5. It involves expenditure from CFI (Consolidated Fund of India).
- 6. It can be introduced in either house.





As provided by the Constitution, the Speaker of the last Lok Sabha vacates his office immediately before the first meeting of the newly-elected Lok Sabha.

Therefore, the President appoints a member of the Lok Sabha as the Speaker Pro Tem. Usually, the seniormost member is selected for this.



प्रो टेम स्पीकर:

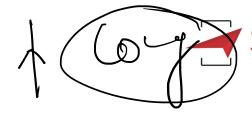
जैसा कि संविधान द्वारा प्रदान किया गया है, पिछली लोकसभा के अध्यक्ष नवनिर्वाचित लोकसभा की पहली बैठक से तुरंत पहले अपना कार्यालय खाली कर देते हैं।

इसलिए राष्ट्रपति लोकसभा के एक सदस्य को स्पीकर प्रो टेम नियुक्त करते हैं। आमतौर पर इसके लिए वरिष्ठतम सदस्य का चयन किया जाता है।









Though the offices of the leader of the House and the leader of the Opposition are not mentioned in the Constitution of India, they are mentioned in the Rules of the House and Parliamentary Statute respectively.

नेता और विपक्ष के नेता के कार्यालयों का उल्लेख भारत के हैं किया गया है, लेकिन उनका उल्लेख क्रमश सभा और संसदीय हैं में किया गया है।





Sessions of Parliament

Summoning TEC | OMIN - 134 President

The president from time to time summons each House of Parliament to meet. But, the maximum gap between two sessions of Parliament cannot be more than six months. In other words, the Parliament should meet at least twice a year.



संसद का सत्र:

Summoning:

राष्ट्रपति समय-समय पर संसद के प्रत्येक सदन को बैठक के लिए बुलाते हैं। लेकिन, संसद के दो सत्रों के बीच अधिकतम अंतर छह महीने से ज्यादा नहीं हो सकता।

दूसरे शब्दों में, संसद की बैठक वर्ष में कम से दो बार होनी चाहिए ।



There are usually three sessions in a year, viz,

1. the Budget Session (February to May);

2. the Monsoon Session (July to September); and

3. the Winter Session (November to December).



Adjournment

A session of Parliament consists of many meetings. Each meeting meeting of a day consists of two sittings, that is, a morning sitting from 11 am to 1 pm and post-lunch sitting from 2 pm to 6 pm.

A sitting of Parliament can be terminated by adjournment or adjournment sine die or prorogation or dissolution (in the case of the Lok Sabha).



स्थगन

संसद के एक सत्र में कई बैठकें होती हैं। एक दिन की हर मीटिंग मीटिंग में दो मीटिंग होती हैं, यानी सुबह 11 बजे से दोपहर 1 बजे तक बैठकर लंच के बाद दोपहर 2 बजे से शाम 6 बजे तक बैठे रहते हैं।

संसद की बैठक को स्थगन या स्थगन या कार्यवाही या विघटन (लोकसभा के मामले में) द्वारा समाप्त किया जा सकता है।

By President Prorogation 41149



The presiding officer (Speaker or Chairman) declares the House adjourned sine die, when the business of a session is completed.

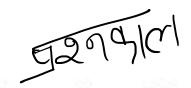
Within the next few days, the President issues a notification for prorogation of the session.





पीठासीन अधिकारी (अध्यक्ष या अध्यक्ष) सदन को अनिश्चितकाल के लिए स्थगित करने की घोषणा करते हैं, जब किसी सत्र का कामकाज पूरा हो जाता है।

अगले कुछ दिनों के भीतर राष्ट्रपति सत्र के सत्रावसान के लिए अधिसूचना जारी करते हैं।





Question Hour

The first hour of every parliamentary sitting is slotted for this. During this time, the members ask questions and the ministers usually give answers. The questions are of three kinds, namely, starred, unstarred and short notice.

Starred question (distinguished by an asterisk) requires ar oral answer and hence supplementary puestions can follow.

An unstarred question, on the other hand, requires a written answer and hence, supplementary questions cannot follow.

ten days. It is answered orally.



In addition to the ministers, the questions can also be asked to the private members. Thus, a question may be addressed to a private member if the subject matter of the question relates to some Bill, resolution or other matter connected with the business of the House for which that member is responsible. The procedure in regard to such question is the same as that followed in the case of questions addressed to a minister.

The list of starred, unstarred, short notice questions and questions to private members are printed in green, white, light pink and yellow colour, respectively, to distinguish them from one another.



Zero Hour Josephan Indian Innovation

Unlike the question hour, the zero hour is not mentioned in the Rules of Procedure. Thus it is an informal device available to the members of the Parliament to raise matters without any prior notice. The zero hour starts immediately after the question hour and lasts until the agenda for the day (ie, regular business of the House) is taken up. In other words, the time gap between the question hour and the agenda is known as zero hour. It is an Indian innovation in the field of parliamentary procedures and has been in



3/2294 92019

only in La

No-Confidence Motion Article 75 of the Constitution says that the council of ministers shall be collectively responsible to the Lok Sabha. It means that the ministry stays in office so long as it enjoys confidence of the majority of the members of the Lok Sabha. In other words, the Lok Sabha can remove the ministry from office by passing a no-confidence motion. The

motion needs the support of 50 members to be admitted.

64



Special Powers of Rajya Sabha

Due to its federal character, the Rajya Sabha has been given two exclusive or special powers that are not enjoyed by the Lok Sabha:

1. It can authorise the Parliament to make a law on a subject enumerated in

the State List (Article 249)

 It can authorise the Parliament to create new All-India Services common to both the Centre and states (Article 312).



BUDGET IN PARLIAMENT

The Constitution refers to the budget as the 'annual financial statement'. In other words, the term 'budget' has nowhere been used in the Constitution. It is the popular name for the 'annual financial statement' that has been dealt with in Article 112 of the Constitution.



Funds

The Constitution of India provides for the following three kinds of funds for the Central government:

- Consolidated Fund of India (Article 266)
- 2. Public Account of India (Article 266)
- Contingency Fund of India (Article 267)

7 Head of execultive. SAFALTA CLASS MAN Initiative by SHRISTIRI



